अध्याय
07

राष्ट्रवाद

सीखने के प्रतिफल

बच्चे राष्ट्रवाद का अर्थ समझ सकेंगे और राष्ट्रवाद की कौन-कौन सी विशेषताएं हैं इससे भी अवगत हो सकेंगे।

राष्ट्रवाद

जो विचारधारा किसी भी राष्ट्र के सदस्यों में एक साझा पहचान को बढ़ावा देता है, उसे राष्ट्रवाद कहते हैं। दूसरे शब्दों में राष्ट्रवाद, राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं लगाव कि एक भावना है जो किसी विशेष भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों में एकता की भावना पैदा करता है।

राष्ट्रवाद की विशेषताएं-

- समूह की भावनाएं-लोगों को आपस में जोड़ने के लिए एक सामान्य भावनाएं होनी चाहिए।
- सामान्य हित-लोगों के बीच हितो की समानता होती है।
- भौगोलिक एकता-समूह के बीच भौगोलिक एकता की भावना होती है।
- सांस्कृतिक एकता-लोगों के बीच सांस्कृतिक एकता की भावना होती है।

राष्ट्र-एक काल्पनिक समुदाय होता है, जो अपने सदस्यों के सामूहिक विश्वास, आकांक्षाओं एवं कल्पनाओं के सहारे एक सूत्र में बांधता है । यह कुछ खास मान्यताओं पर आधारित होता है, जिससे वे अपनी पहचान कायम करते हैं।

राष्ट्र की विशेषताएं या मान्यताएं-

- साझे विश्वास -राष्ट्र के निर्माण में सामूहिक विश्वास का महत्वपूर्ण योगदान होता है। एक राष्ट्र का अस्तित्व तभी संभव है ,जब उसके सदस्यों को यह विश्वास हो कि वे एक दूसरे के साथ हैं।
- इतिहास-प्रत्येक राष्ट्र के पास अपना एक ऐतिहासिक पहचान होता है ।नेहरू जी ने अपनी पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इंडिया में इस बात का उल्लेख किया है।
- एक खास भौगोलिक क्षेत्र-प्रत्येक राष्ट्र की पहचान एक खास भौगोलिक क्षेत्र से होता है।
- साझी राजनीतिक पहचान-प्रत्येक राष्ट्र का अपना एक स्वतंत्र राजनीतिक पहचान होता है। व्यक्ति को धर्म ,भाषा क्षेत्र इत्यादि से ऊपर उठाता है।

© JCERT not to be republished

- राष्ट्रीय आत्म निर्णय-प्रत्येक राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय समुदाय से मांग करता है कि हमें एक अलग राजनीतिक इकाई का दर्जा दिया जाए।

बहुलवाद

एक ऐसा सिद्धांत है ,जो समाज में अपनीआज्ञा का पालन कराने के लिए ,शक्ति को एक ही जगह केंद्रित न करके अलग-अलग जगह विकेंद्रीकृत करने का प्रयास करता है।

बहुलवाद यह मानता है कि विभिन्न हितों, विश्वासों और जीवनशैली वाले लोग शांति पूर्वक सहअस्तित्व के साथ रहेंगे। सांस्कृतिक रूप से बहुलवादी समाज में विभिन्न समूह के लोग एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता के भाव रखते हैं और बिना संघर्ष के एक साथ रहते हैं।

रविंद्र नाथ टैगोर के अनुसार "राष्ट्रवाद हमारा अंतिम अध्यात्मिक मंजिल नहीं हो सकता। मेरी शरण स्थली तो मानवताहै। मैं हीरो की कीमत पर शीशा नहीं खरीदूंगा और जब तक मैं जीवित हूं देशभक्ति को मानवता पर कभी भी बिजयी नहीं होने दूंगा।"

© JCERT not to be republished